प्रारम्भिक

सांस्कृत बाबय संग्रह

संस्कृतं के पारम्भिक विद्यार्थियों के लिये कुछ व्यवहारोपयोगी वाक्यों एवं शब्दों का संग्रह जिसकी सहायता से वे आरम्भ में ही संस्कृत में कुछ बोलने तथा समझने की योग्यता प्राप्त कर सकते हैं। (एक सप्ताह का पाठयकम)



सार्वभौम संस्कृत प्रचार संस्थानम्



स्व0 पं0 वासुदेव द्विवेदी शास्त्री

संस्थापक-सार्वभौम संस्कृत प्रचार संस्थानम् वाराणसी

सार्वभौम संस्कृत प्रचार संस्थानम् वाराणसी के पुस्तक विक्रय घन से प्रकाशित

प्रकाशक श्रीनिवास द्विवदी शास्त्री

संचालकः सार्वभौम संस्कृत प्रचार संस्थानम् वाराणसी

फोन : 9935110038

आवृत्तिः पचीसवीं

संख्या : एक हजार

मूल्य : पाँच रूपये पचास पैसे

तिथि : 26 मई 2013

मुद्रक : पंकज प्रिन्टिंग प्रेस, बलिया

मो-09918207123

प्रारम्भिक

संस्कृत वाक्य संग्रह

छात्रों के नाम-ग्राम आदि के सम्बन्ध में प्रश्न, एवं उत्तर

'तुम्हारा नाम क्या है? प्र0-तव किं नाम अस्ति? मेश नाम है। उ0-मम नाम.....अस्ति तुम्हारे पिता का नाम क्या है? प्र0-तव पितुः नाम किम् ? उ0-मम पितुः नाम..... मेरे पिता का नाम है। प्र0-तव पिता किं करोति? तुम्हारे पिता क्या करते हैं? उ0-मम पिता....कार्यं करोति मेरे पिताकाम करते हैं? तुम्हारा देश कौन है? प्र0-तव देश: क:? उ0-मम देश: अस्ति मेरा देश है। तुम्हारा प्रदेश कौन है? प्र0-तव प्रदेश: कः? त0-मम प्रदेश:....अस्ति मेरा प्रदेश है। तुम्हारा जिला कौन है? प्र0-तव मण्डलं किम्? मेरा जिला है। उ0-मम मण्डलम्....अस्ति तुम्हारा ग्राम कौन है? प्र0-तव ग्रामः कः? उ0-मम ग्रामःअस्ति मेरा ग्राम है। तुम्हारा डाकखाना कहाँ है? प्र0-तव पत्रालयः कुत्र? उ0-मम पत्रालयः ...ग्रामे अस्ति मेरा डाकखाना.....गाँव में है। प्र0-अत्र त्वं कुत्र निवससि? यहाँ तुम कहाँ रहते हो? उ0-अत्र अहं...स्थाने,वीथ्याम् मैं यहाँ.....स्थान में, गलीसमागे निवासामि में, मुहल्ले में रहता हूँ।

पढ़ने आदि के सम्बन्ध में प्रश्न एवं उत्तर

प0-त्वं किं पटिस? तुम क्या पढ़ते हो? उ0-अहं संस्कृतं, हिन्दीं में संस्कृत, हिन्दी तथा तथा आंग्लभाषां पठामि आंग्लभाषा पढ़ता हूँ। तुम कहाँ पढ़ते हो? प्र0-त्वं कुत्र पठसि? उ0-अहं.....विद्यालये पठामि मैं.....विद्यालय में पढ़ता हूँ। किस कक्षा में पढते हो? प्र0-कस्यां कक्षायां पठसि? उ0-अहं.....कक्षायां पठामि मेंकक्षा में पढ़ता हूँ। प्र0-किं किं पुस्तकं पठिस? कौन-कौन पुस्तक पढ़ते हो? उ0-....पठामिपढ़ता हूँ। सूचना— यदि बड़े छात्रों से पूछना हो तो 'त्वं तव' के स्थान पर भवान्, भवतः एवं स्त्रीलिंग में भवती, भवत्याः ऐसा प्रयोग करना चाहिए। इसी प्रकार पठिस निवसिस के स्थान पर पठित निवसित

कुशल-प्रश्न सम्बन्धी वाक्य

प्रo-का वार्ताः कः समाचारः? उo-सर्वं शोभनं वर्तते प्रo- स्वास्थ्यं शोभनं वर्तते? उo- आम्, स्वास्थ्यं शोभनं वर्तते प्रo- कुशलं वर्तते? उo- आम्, कुशलं वर्तते प्रo- अपि कुशली वर्तते प्रo- आप्, कुशली वर्ते प्रo- अपि कुशली वर्ते प्रo- अपि कुशलिनी भवती? उo- आम्, कुशलिनी अहम्

ऐसा प्रयोग करना चाहिये।

क्या बात है? क्या हाल है? सब कुछ अच्छा है। स्वास्थ्य अच्छा है? हाँ, स्वास्थ्य अच्छा है। कुशल है? हाँ, कुशल है। तुम कुशल से तो हो? हाँ, मैं-कुशल से तूँ। आप कुशल से तो हैं? (स्त्री) हाँ, मैं कुशल से तूँ।

आज्ञा एवं अनुरोधवाचक क्रियापदं तथा उनके साथ लगने वाले उपयोगी अव्यय एवं शब्द

क्रिया पद आगम्यताम् आइये गम्यताम् जाइये उपविश्यताम् बैठिये आस्यताम्-बैठिये उत्त्थीयताम् उटिये दीयताम् दीजिये गृह्यताम् लीजिये कथ्यताम् कहिये श्र्यताम् सुनिये चल्यताम् चलिये विरम्यताम् रूकिये स्थीयताम् ठहरिये भक्ष्यताम् खाइये पीयताम् पीजिये अपस्रियताम् हटिये दृश्यताम् देखिये नीयतम् ले जाइये पठ्यताम् पढ़िये लिख्यताम् लिखिये क्रियताम् कीजिये उच्यताम् बोलिये त्यज्यताम् छोडिये

अव्यय एवं शब्द अत्र (यहाँ) उपरि, नीचै: शीघ्रम् (जल्दी) तत्र (वहाँ) इत: (यहाँ से) शनै: (धीरे)। सम्यक् (अच्छी तरह) सुखम् (आराम से)। तृष्णीम् (चुप चाप)झटिति (जल्दी) अत्र, तत्र। इतः (यहाँ से) ततः (वहाँ से) शीघ्रम् (जल्दी)। इदम् (यह) तत् (वह) किञ्चित् (कुछ) अल्पम्, (थोड़ा) सर्वम् (सब) नि:सङ्कोचम्। 🕈 स्वकार्यम्(अपना काम्), समाचार:, किमपि। किञ्चित् (कुछ) गीतम्, श्लोकः, कथा। अग्रे(आगे) पश्चात्(पीछे) शीघ्रम्, शनै: शनै: । किञ्चित् क्षणम् (थोड़ी देर) अत्रैव (यहीं पर)। तत्रैव (वहीं पर) तावत् (तबतक) शनै: शनै:, त्वरितम्, (जल्दी) नि:सङ्कोचग जलम्, दुग्धम्, रसः, चायम्, काफी। इत:, तत:, द्वारात् (द्वार से) मार्गात्। चित्रम्, नाटकम्, दृश्यम्, पुस्तकम्। आनीयताम् ले आइये ततः (वहाँ से) अधः (नीचे) शीघ्रम्। इतः (यहाँ से) उपरि, शनैः शनैः। पाठः, पुस्तकम्, श्लोकः, कविता, किमपि। पत्रम्, लेखः, अनुवादः, निबन्धः, अर्थः। स्वकार्यम्, शीघ्रम्, निर्भयम्। स्पष्टम् (साफ) सम्यक्, शीघ्रं, निर्भयम्। इयं वार्ता (यह बात) इदं स्थानम्, अयं विवाद: ।

उद्घाद्यताम्-खोलिये पिधीयताम्-वन्द कीजिये दश्यंताम् दिखाइये आह्यताम् बुलाइये अन्विष्यताम् ढूँढिये उत्त्थाप्यताम् उठाइये ज्वाल्यताम् जलाइये निर्वाप्यताम् बुझाइये गीयताम् गाइये क्षिप्यताम् फेंकिये प्रसार्यताम् पसारिये वाद्ययताम् बजाइये स्थाप्यताम् रखिये सम्मार्ज्यताम् बुहारिये प्रक्षाल्यताम् धोइये आस्तीर्यताम् बिछाइये अपसार्यताम् हटाइये

तालकम्(ताला) द्वारम्, कपाटम्(किवाड़ी)। गवाक्षम्(खिड्की) पेटिका(पेटी) जलयन्त्रम्। मार्गः (रास्ता) स्थानम्, अनुवादः, लेखः। बालकः, छात्रः, सेवकः, शीघ्रम्। अत्र, तत्र, सर्वत्र, सम्यक्, शीघ्रम्। उपरि, सम्यक्, शनै:, झटिति। दीप:, विद्युद्दीप:, वर्तिका (बत्ती) हसन्ती (अंगीठी) इन्थनम् (लकड़ी)। गीतम्, गानम्, कविता, श्लोकः। अवकर: (कूड़ा) बहि: (बाहर) दूरे। विस्तीर्यताम् फैलाइये आसनम्, कम्बलम्, आस्तरणम्। वस्त्रम्, आसनम्, उपरि, सम्यक्, कम्बलम्। वाद्यम्, (बाजा) घण्टिका, घण्टा। अत्र, तत्र, उपरि, नीचै:, मध्ये। गृहम्, प्राङ्गणम्, द्वारम्, प्रकोष्ठः। पात्रम्, वस्त्रम्, स्थानम्, मुखम्। आसनम्, आस्तरणम् (बिछौना) शय्या। इदम्, ततः, इतः, शीघ्रम्, किञ्चित्।

सूचना- 1- ऊपर लिखे हुए सभी क्रियापद कर्मवाच्य एवं भाववाच्य के हैं। अत: इनके साथ त्वं भवान् भवती आदि प्रथमान्त पदों का प्रयोग नहीं होता। इनके स्थान पर त्वया, भवता, भवत्या आदि तृतीदान्त पदों का प्रयोग करना चाहिए। छात्रों को इस भेद को अच्छी तरह समझ लेना चाहिए।

²⁻ ऊपर लिखे 'आइये जाइये' आदि हिन्दी क्रियापदों के स्थान पर 'आओ जाओ' आदि पदों का भी प्रयोग करना चाहिए।

³⁻ ऊपर लिखे क्रिया पदों में 'न तथा मा' लगाकर निषेधवाचक वाक्यों का प्रयोग करना चाहिए।

[5 शय्यताम् सोइये अधः, उपरि, सुखम्, सानन्दम्। जागर्व्यताम् जागिये महाशय, मित्रवर, शीघ्रम्, झटिति। पृच्छ्यताम् पूछिये आरभ्यताम् आरम्भ कीजिये समाप्यताम् सम्प्रप्त कीजिये धार्यताम् धारण कीजिये क्षम्यताम् क्षमा कीजिये गन्तुं दीयताम् जाने दीजिये

प्रश्न:, समाचार:, पाठ:, अर्थ:। प्रार्थना, श्लोकः, पाठः, संगीतम्। कार्यम्, कार्यक्रमः, मङ्गलाचरणम्। वस्त्रम्, पादुका, उपानत् (जूता) दोष:, अपराध:, प्रमाद: (लापरवाही) अन्तः (भीतर) बहिः (बाहर) उपरि।

कुछ प्रश्नवाचक वाक्य (वर्तमान काल)

किं करोषि? क्या करते हो? किं याचसे? क्या माँगते हो? किं कथयिस? क्या कहते हो? किं पश्यिस? क्या देखते हो? किं पृच्छिस? क्या पूछते हो? कुत्र गच्छिस? कहाँ जाते हो? किम् इच्छिसि? क्या चाहते हो? किम् अन्वेषयसि? क्या ढूँढते हो?

भवान् किं करोति? भवान् किम् इच्छति? भवान् कुत्र गच्छति? भवान् किं कथयति? भवान् किं पृच्छति? भवान् किम् अन्वेषयति? भवान किं याचते?

आगन्तुं दीयताम् आने दीजिये

आप क्या करते हैं? आप क्या चाहते हैं? आप कहाँ जाते हैं? आप क्या कहते हैं? आप क्या पूछते हैं? आप क्या ढूँढते हैं? आप क्या माँगते हैं?

कुछ और वाक्य

जानामि जानता हुँ न जानामि नहीं जानता हूँ इच्छामि चाहता हुँ न इच्छामि नहीं चाहता हूँ आं श्रीमन् जी हाँ नहिश्रीमन् जी नहीं कथं न क्यों नहीं

है अस्ति, वर्तते किं वर्तते? क्या है? न वर्तते; नास्ति नहीं है कुछ नहीं न किमपि चाहिए डष्यते नहीं चाहिए न इष्यते किमपि न इष्यते कुछ नहीं चाहिए

[6] कुछ गुरुओं से आज्ञा लेने के वाक्य

जलं पातुम् इच्छामि जलं पातुं गच्छामि भोजनं कर्तुं गच्छामि लघुशंकां कर्तुं गच्छामि पाठं पठितुम् इच्छामि गृहं गन्तुम् इच्छामि आपणं गच्छामि अद्य अवकाशम् इच्छामि अनुवादं लिखितुम् इच्छामि अनुवादं दर्शयितुम् इच्छामि किञ्चित् प्रष्टुम् इच्छामि किञ्चित् प्रष्टुम् इच्छामि कागन्तुं शक्नोमि?

जल पीना चाहता हूँ।
जल पीने जाता हूँ।
भोजन करने जाता हूँ।
भोजन करने जाता हूँ।
लघुशंका करने जाता हूँ।
पाठ पढ़ना चाहता हूँ।
घर जाना चाहता हूँ।
आज छुट्टी चाहता हूँ।
अनुवाद लिखना चाहता हूँ।
अनुवाद दिखाना चाहता हूँ।
कुछ पूछना चाहता हूँ।
कुछ कहना चाहता हूँ।
क्या मैं आ सकता हूँ?
क्या मैं जा सकता हूँ?

(इन वाक्यों के पहले विद्यार्थी 'श्रीमान्' पद जोड़ लिया करें)

छात्रों से कहने योग्य कुछ और वाक्य वर्तमान काल

कथं न पठिस? कथं न लिखिस? कथं न वदिस? कथं न उत्तरं ददािस? किञ्चित् वक्तव्यं वर्तते? किञ्चित् प्रष्टव्यं वर्तते? क्वचित् गन्तव्यं वर्तते? क्यों नहीं पढ़ते हो? क्यों नहीं लिखते हो? क्यों नहीं बोलते हो? क्यों नहीं उत्तर देते हो? क्छ कहना है? क्छ पूछना है? कहीं जाना है? जानासि? जानते हो? चलिस? चलते हो? बुध्यसे? समझते हो? आगच्छिस? आते हो? श्रृणोषि? सुनते हो? गोपायिसि? छिपाते हो? निदासि? सोते हो? असत्यं वदिसि? झूठ बोलते हो? (प्रत्येक क्रिया में 2,3 शब्द मिलाकर वाक्य बनाइये)

कुछ आज्ञा लेने के वाक्य

पठानि पढूँ? गच्छानि जाऊँ? करवाणि करूँ? लिखानि लिखूँ? आगच्छानि आऊँ? कथयानि कहूँ? वाचयानि वाचूँ? नयानि ले जाऊँ? वदानि बोलूँ? श्रावयानि सुनाऊँ? आनयानि ले आऊँ? चलानि चलूँ? दर्शयानि दिखाऊँ?तिष्ठानि ठहरूँ? वादयानि बजाऊँ? पृच्छानि पूळूँ? उपविशानि बैठूँ? पाठयानि पढाऊँ? त्यजानि छोड़ दूँ? आह्वयानि बुलाऊँ? लेखयानि लिखाऊँ? (प्रत्येक क्रिया में 2-3 शब्द मिलाकर वाक्य बनाइये)

कुछ भूतकाल के क्रियापद

कृतवान् किया नीतवान् ले गया दत्तवान् दिया आनीतवान् ले आया गृहीतवान् लिया गतवान गया उत्तिथतवान् उठा ज्वालितवान् जलाया उद्याटितवान् खोला पिहितवान् बन्द किया उपविष्टवान् बैठा निर्वापितवान्बुझाया श्रुतवान् सुना भुक्तवान् खाया आगतवान् आया दृष्टवान् देखा पीतवान् पीआ पठितवान् पढा पाठितवान् पढ़ाया लिखितवान् लिखा पृष्टवान् पूछा लेखितवान् लिखाया कथितवान् कहा ज्ञातवान् जाना विस्मृतवान् भूल गया श्रावितवान् सुनाया चोरितवान् चुराया गोपितवान् छिपाया दर्शितवान् दिखाया धतवान रखा

1- इन पदों में विद्यार्थी अहं, त्वं, भवान्, सः, यः अयम् आदि कर्तृपदों को तथा किं; कुत्र, कदा, कथम्, किमर्थ, कुतः तथा अद्य (आज) हाः (बीता कल) परहाः (बीता परसों) आदि अव्ययों को जोड़कर वाक्य बनावें।

2-स्त्रीलिंग में 'वान्' के स्थान पर 'वती' लगाना चाहिए। जैसे कृतवती, गतवती आदि। स्त्रीलिंग में अहम्, त्वम्, भवती, सा, या, का, इयम् आदि कर्तृपद लगा कर बोलना चाहिए।

3- उपर्युक्त क्रियापदों में अस्ति, आसीत्, भविष्यति आदि रूपों को जोड़कर कृतवान् अस्ति-किया है, कृतवान् आसीत्-किया था, कृतवान् भविष्यति-किया होगा आदि वाक्यों का प्रयोग करना चाहिए।

कुछ भविष्यत्काल के क्रियाएंद

	The state of the s	The second secon	AND THE RESERVE OF THE PARTY OF
करिष्यसि	करोगे?	करिष्यामि	करूँगा
पठिष्यसि	पढ़ोगे?	पठिष्यामि	पढूँगा
लेखिष्यसि	लिखोगे?	लेखिष्यामि	लिखुँगा
वदिष्यसि	बोलोगे?	वदिष्यामि	बोलूँगा
श्रावियष्यसि	सुनाओगे?	श्रावियष्यामि	सुनाऊँगा
दर्शयिष्यसि	दिखाओगे?	दर्शयिष्यामि	दिखाऊँगा
कथयिष्यसि	कहोगे?	कथयिष्यामि	कहुँगा
गमिष्यसि	जाओगे?	गमिष्यामि	जाऊँगा
चलिष्यसि	चलोगे?	चलिष्यामि	चलुँगा
गिलिष्यसि	मिलोगे?	मिलिष्यामि	प्रतूगा मिलूँगा
नेष्यसि	ले जाओगे?	नेष्यामि	ले जाऊँगा
आनेष्यसि	ले आवोगे?	आनेष्यामि	ल जाऊगा ले आऊँगा
		11.0	

इन क्रियापदों में 'सि' के स्थान पर 'ति' लगाकर प्रथम पुरुष का वाक्य, किं लगाकर प्रश्नवाचक वाक्य, न लगाकर निषेधवाचक वाक्य तथा अद्य, श्वः (कल) परश्वः (परसों) सायं, प्रातः आदि लगाकर कालवाचक वाक्य बनाने का अभ्यास करें।

विद्यार्थियों को सावधान करने के कुछ वाक्य

शीम्रं गच्छे: जल्दी जाना शुद्धं लिखे: शुद्ध लिखना शीम्रम् आगच्छे: जल्दी आना शुद्धं पठे: शुद्ध पढ़ना विलम्बं न कुर्या: विलम्ब न करना न विस्मरे: भूलना नहीं एवं न कुर्या: ऐसा न करना ध्यानं दद्या: ध्यान देना

अतिथिसत्कार सम्बन्धी वाक्य

नमामि, प्रणमामि, नमस्करोमि, स्वागतं श्रीमताम् अपि सक्शलं समागताः श्रीमन्तः? कृतकृत्याः वयं श्रीमतां दर्शनेन अनेन मार्गेण आगम्यताम् कुपया अत्रैव उपानही मुच्येताम् अत्र वस्तुनि रक्ष्यन्ताम् इदं श्रीमताम् आवासस्थानम् अस्ति शौचालयः गम्यताम् दन्तधावनं क्रियताम् स्नानं विधीयताम् अयं शौचालयः अस्ति अत्र मृत्तिका वर्तते इदं दन्तधावनं वर्तते इदं धौतवस्त्रं वर्तते इयम् अंगप्रोञ्छनी अस्ति इदं तैलं वर्तते एष दर्पणः अस्ति इयं कंकतिका वर्तते इमानि पुष्पाणि सन्ति

प्रणाम! नमस्कार। आप का स्वागत है। आप सकुशल तो आ गये? आपके दर्शन से हम कृतकृत्य हो गये। इस मार्ग से आइये। कृपया यही जूता उतार दें। यहाँ समान रक्खें यह आपके ठहरने का स्थान है। शौच जायें। दतुअन करें। स्नान करें। यह शौचालय (पखाना) है। यहाँ मिट्टी है। यह दतुअन है। यह धोती है। यह अगौंछी है। यह तेल है। यह आइना है। यह कंघी है। ये फुल हैं।

[10]

जलपानं विधीयताम् भोजनार्थं चल्यताम् अयं भोजनालयः अस्ति इदम् आसनं वर्तते ओदनं गृह्यताम् सूपं गृह्यताम् शाकं गृह्यताम् शष्कुली गृह्यताम् दिध गृह्यताम् शर्करा गृह्यताम् पर्पट: गृह्यताम् मोदकं गृह्यताम् अवलेहो गृह्यताम् ताम्बूलं गृह्यताम् पूगीफलं गृह्यताम् अपरमपि किञ्चिदिष्यते? स्वल्पमपि गृह्यताम्

जलपान करें। भोजन के लिये चले। यह भोजनालय है। यह आसन है। भात लें। दाल लें। साग लें। पूड़ी लें। दही लें। चीनी लें। पापड़ लें। मिठाई लें। चटनी लें। पान लें। सुपारी लें। और भी कुछ चाहिये। थोड़ा भी लें।

भोजनालय सम्बन्धी वाक्य

पाकस्थानम् लिप्यताम् पात्राणि मार्ज्यन्ताम् भोजनसामग्री आनीयताम्, अग्निः ज्वाल्यताम् इन्धम् आनीयताम् इन्धम् छिद्यताम् भोजनसामग्री एकत्री क्रियताम् तण्डुलं प्रक्षाल्यताम्

चौका लगाओ। बरतन माँजो। भोजन का सामान लाओ। आग जलाओ। लकड़ी लाओ। लकड़ी चीरो।

भोजनसामग्री इकट्ठी करो। चावल धोओ।

पिष्टकं पिण्डीक्रियताम् CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection. An eGangotri Initiative स्थाली अधिरोप्यताम् उपस्करः पिष्यताम् लवणं प्रक्षिप्यताम् शाकः धूपाय्ताम् अवलेहः निर्मीयताम् * सूपे घृतं प्रक्षिप्यताम् रोटिकायां घृतं समज्यताम् भोजनं परिवेष्यताम् आगम्यताम्, सम्पन्ना रसवती बटुली चढ़ाओ। ममाला पीसो। नमक डालो। शाग छौको। चटनी बनाओ। दाल में घी डालो। रोटी में घी लगाओ। भोजन परोसो। आइये, रसोई तैयार है।

दिनचर्या का विवरण

11

(छात्रों को निम्नलिखित रूप में अपनी दिनचर्या बतानी चाहिये।) अहं प्रात: चतुर्वादने जागर्मि मैं सबेरे चार बजे जागता हूँ।

ततः ईश्वरस्मरणं करोमि ततः शय्यायाः उत्तिष्ठामि उत्तथाय गुरूजनान् प्रणमामि ततः प्रकोष्ठं सम्मार्जयामि तत्पश्चात् शौचालयं गच्छामि ततः हस्तौ पादौ प्रक्षालयामि अनन्तरं मुखं प्रक्षालयामि ततः दन्तधावनं करोमि तदनन्तरं स्नानं करोमि ततः वस्त्रं धारयामि पश्चात् आर्दं वस्त्रं प्रक्षालयामि तदनन्तरं वस्त्रं प्रसारयामि ततः सन्ध्यावन्दनं करोमि ततः गीतापाठं करोमि ततः जलपानं करोमि

मैं सबेरे चार बजे जागता हूँ। तब ईश्वर का स्मरण करता हैं। तब शय्या से उठता है। उठकर बड़ों को प्रणाम करता हैं। तब कमरा साफ करता हूँ। उसके बाद शौचालय जाता हूँ। तब हाथ और पैर धोता हैं। बाद में मुँह धोता हैं। तब दातुन करता हैं। उसके बाद स्नान करता हूँ। तब कपड़ा पहनता हैं। पीछे गीला कपड़ा धोता हूँ। उसके बाद कपड़ा पसारता हूँ। तब सन्ध्यावन्दन करता हैं। तब गीता का पाठ करता हूँ। तब जलपान करता है।

अनन्तरं भोजनं पचामि ततः भोजनं करोमि ततः पठितुं विद्यालयं गच्छामि ततः सायं गृहम् आगच्छामि गृहम् आगत्य किञ्चित् खादामि अनन्तरं क्रीडितुं गच्छामि ततः आगत्य दीपं ज्वालयामि अनन्तरं किञ्चित् पठामि पश्चात् भोजनं करोमि प्रायः दशवादने शयनं करोमि शयनसमये दीपं निर्वापयामि

तब भोजन बनाता हूँ। तब भोजन करता हूँ। तब पढ़ने विद्यालय जाता हूँ। तब शाम को घर आता हूँ। घर आकर कुछ खाता हूँ। बाद में खेलने जाता हूँ। वहाँ से आकर दीपक जलाता हूँ। बाद में कुछ पढ़ता हूँ। पीछे भोजन करता हूँ। ततः ईश्वरं स्मृत्वा शयनं करोमि तब ईश्वर का स्मरण कर सोता हूँ। लगभग दस बजे सोता हैं। सोते समय दीपक बुझाता हूँ।

सूचना 1- ऊपर लिखी 'जागर्मि' आदि वर्तमान काल की क्रियाओं के स्थान पर निम्नलिखित भूतकाल की क्रियाओं को जोड़कर इन वाक्यों का भूतकाल में भी प्रयोग करना चाहिये। यथा-

2- जागृतवान् (जगा) कृतवान् (किया) उत्थितवान् (उठा) गतवान् (गया) प्रक्षालितवान् (धोया) धारितवान् (धारण किया) प्रसारितवान् (पसारा) सम्मार्जितवान् (साफ किया) खादितवान् (खाया) पठितवान् (पढ़ा) ज्वालितवान् (जलाया) पक्कवान् (पकाया) आदि।

3- इन पदों को स्त्रीलिंग बनाने के लिये 'वान्' के स्थान पर 'वर्ती' पढ़ना चाहिये। यथा-जागरितवती, कृतवती, गतवती आदि।

4- जगाने का समय बतलाने के लिए सार्द्ध चतुर्वादने (साढ़े चार बजे) पादोन- पच्चावाने (पौने पाँच बजे) पञ्चवादने (पाँच बजे) सपाद-पञ्चवादने (सवा पाँच बजे) षड्वादने (छ: बजे) आदि पदों का प्रयोग करना चाहिये। इसी प्रकार सार्द्ध, पादोन, सपाद आदि पदों का सब संख्याओं के साथ प्रयोग करना चाहिये।

[13] आवश्यक शब्द-संग्रह

फल-वर्ग

आम	आम्रम्	सिंघाड़ा	श्रृङ्गाटक:
जामुन	जम्बूफलम्	केला	कदली
अमरूद	पेरूकम्	इमली	अम्लिका
कटहल	पनसम्	अमड़ा	आम्रातकम्
शरीफा	सीताफलम्	अँवरा	आमलकम्
बैर	बदरी	निम्बू	निम्बूकम्
किसमिस	क्षुद्रदाक्षा	दाख	द्राक्षा
मूँगफली	मण्डपी	अन्नवर्ग	
बादाम .	बादामम्	गेहूँ	गोधूम:
खजूर •	खजूर्स्म्	जब	यव:
छुहाड़ा	शुष्कखजूर्रम्	रहर	आढकी
अखरोट	अक्षौटकम्	चना	चणकः
अंगूर	आमद्राक्षा 🔭	मटर	करेणुः
सेव	सेवं, बदरम्	मूँग	मुद्ग:
नासपाती	रूचिफलम्	उदड़	माषः
नारंगी	नारंगम्	सरसों	सर्षप:
नारियल	नारिकेलम्	मकई	मकाय:
अनार	दाडिमम्	मसुरी	मसूर
रड़मेवा,पपीता	एरण्डचिर्भिटम्	धान	धान्यम्
खरबूजा	खर्बूजः	गृह वर्ग	
तरबूजा	कालिंगम्	कोठरी ू	प्रकोष्ठः
ककड़ी	कर्कटी	दालान	द्वारप्रकोष्ठः
खीरा	त्रपुसम्	ओसारा	प्रघण:
फूँट	स्फुटी	खिड़की	पक्षद्वारकम्
कन्द	कन्दः	झरोखा	गवाक्षः

ਸਦ-ਨ		ं 14 पंखा, बेना	aniant
	त्रस्तु वर्ग		व्यजनम्
झाडू	मार्जनी	घड़ी	घटीयन्त्रम्
चूल्हा	चुल्लिका	तराजू	तुला
खूँटी	नागदन्तः	सन्दूक	मंजूषा
धान्य	-वर्ग	पेटी	पेटिका
अरगनी	लङ्गनी	यान-	वर्ग
ताला	तालकम्	सवारी	यानम्
चाबी	ताली	गाड़ी	शकट:, शकर
खाट	खट्वा	रेलगाड़ी	वाष्पशकटी
पलंग	पर्यङ्क	बैलगाड़ी	गन्त्री
कुल्हाड़ी	कुठार:	हवाई जहाज	वायुयानमू
छूरी	छूरिका	जहाज	पोत:
कैंची	कर्तरी	वस्त्र-वर	f ·
पीढ़ा	पीठम्	धोती	धौतवस्त्रम्
चौकी	पीठिका	साड़ी	शाटी
दीया	दीपक:	लँगोटा	कौपीनम्
बत्ती	वर्तिका	कमीज	कंचुक:
ऐना	दर्पणः	हाफकमीज	अर्घकंचुक:
कंघी	कंकतिका	अंगरखा	अंगरक्षकम्
सूई	सूचि:	चद्दर	उत्तरीयम्
डोरा	सूत्र, तन्तुः	अंगौछी	अंगप्रोंछनी
बोरा	गोणी	रूमाल	कर्पट:
जूता	उपानत् (स्त्री)	पगड़ी	उष्णीष:
छाता	छत्रम्	टोपी	टोपिका
खड़ाऊँ	काष्ठपादुका	तकिया	उपधानम्
छड़ी	यष्टिका	विछौना	आस्तरणम्
सीढ़ी	सोपानम्	रजाई	तुलपटी

		f 16 1	
बिजलीक	ा पंखा विद्युद्व्य	ा । । जनम् कबल	कम्बल:
गद्दी	गदिर्दका	वेशवर-	
तोषक	तूलिका	मशाला	वेसवार:
शाक-	-वर्ग	जीरा	जीरकम्
तरकारी	शाक:	धनिया	धान्याकम्
आलू	आलुः	मिर्च	मरिचम्
परवल	पटोल:	आदी	आर्द्रकम्
कोहड़ा	कूष्माण्डः	हल्दी	हरिद्रा
लौकी	अलाबु:(स्त्री)	सौंफ	मधुरिका
भिंडी	कोशातकी	मेथी	मेथिका
रामतरोई	राजकोषातकी	जवाइन	यवानी
भंटा	वृन्ताकः	हींग	हिंगु:
घेवड़ा, नेनुआ	महाकोषातकी	लौंग	लवंगम्
करेला	कारवेल्लम्	लाची	एला
मूली	मलकम्	तेजपात	तेजपत्रम्
गोभी	गोजिह्वा	नमक	लवणम्
गाजर	गाजरम्	सेंधा नमक	सैन्धवम्
प्याज	पलाण्डुः	पात्र-वर्ग	
लहशुन	लशुन:	बरतन	पात्रम्
बथुआ	वास्तुकः	बटलोही	स्थाली, उखा
चौराई	तड्डलीयकः	कराही	कन्दुः
पोई	पोतकी	करछुल	दर्वि:(स्त्री)
सेम	शिम्बिः	सड़सी	संदंशक:
पोदीना	पुदिन:	चिमटा	संदंशक:
सोआ	शतपुष्पा	चमचा	चमसः
बण्डा	पिण्डालुः	थाली	स्थालम्
ओल	शूरण:	कटोरा	कंस:, करोटि:

[16]

- 17			10]	
	घड़ा	घट:, कलशः	चिउड़ा	विपुटक:
	लोटा	जलपात्रम्	सत्तू	सक्तुः
	गिलास	गल्लकः	अचार	आसुतम्
	कसोरा	शराव:	चटनी	अवलेह:
	हॅंड़िया	हण्डिका	अमावट	आम्रावर्तः
	भक्य-लेह	घ्र-पेय-चोष्य	वर्गा भूजा	भर्जनम्
	चावल	तण्डुलम्	लावा	लाजाः
	भात	भक्तम्	घुघनी ँ	कुल्माष:
	दाल (कच्ची) द्विदलम्	चीनी	शर्करा, सिता
	दाल (रंधी)	सूपम्	मिश्री	सितोपलः
	मांड	मण्डम्	गुड़	गुड़:
	खिचड़ी	कृशरा	मिठाई	मोदकम्
	आटा	पिष्टकम् •	लड्डू	लड्डुकम्
	लोई	लोप्त्री	जलेबी	कुण्डलिनी
	रोटी .	, रोटिका	मान-वर्ग	
		ो अंगारकर्कटी	पाव	कुड़व:
	चोखा,भर्ता		सेर	सेरः, प्रस्थः
	भाजी	भाजी	कौड़ी	वराटकम्
	पूड़ी	शष्कुली	पैसा	पण:
	हलुआ	संयावकः	आना	आणकम्
	मलाई	सन्तानिका	लेखन साम	ग्री वर्ग
	बेसन	बेसनम्	कागज ै	कागदः, पत्रम्
	बड़ा	वटकः	कलम, पेन	लेखनी, कलमः
	बड़ी	वटी	फौन्टेनपेन	मसिलेखनी
	पापड़	पर्पट:	दावात	मसिधानी
	कढ़ी	क्वथिता	स्याही	मसी
	पूआ	अपूपः, पूपः	पेन्सिल	तलिका
CC-0'.F	Panini Kanya N	Maha Vidyalaya C	Coll <mark>ec</mark> tion. An eGang	otri Initiative

छात्रों को एक सलाह

(1)

छात्रों संस्कृत पढ़ो प्रेम से इसको नहीं भुलाओ,
यदि सुयोग्य बनना चाहो तो इसका ज्ञान बढ़ाओ।
संस्कृत पढ़ने से ही होगा शुद्ध साफ उच्चारण,
भाषा का भी ज्ञान बढ़ेगा संस्कृत के ही कारण।
तभी लेख लिखने में भी हो तुम आगे बढ़ सकते,
संस्कृत पढ़ने से तुम अच्छी कविता भी कर सकते।
इसी हेतु संस्कृत पढ़ने में अब से भी लग जाओ,
साथ-साथ हिन्दी इंगलिश के इसमें भी डट जाओ।

(2)

संस्कृत पढ़ने में विद्यार्थी करते आज ढिलाई, आगे चलकर किन्तु न होगी उनकी कभी भलाई। मौका आने पर अपने को जब अयोग्य पायेंगें, भरी सभा में नत-मस्तक हो निश्चित पछतायेंगे। इसी लियेअब से भी संभलो, सावधान हो जाओ, छात्रों, संस्कृत पढ़ो प्रेम से इसको नहीं भुलाओ।

'संस्कृतगौरवगानम् से'

प्रार्थनागीतम्

(1)

(2)

(लय- माँ शारदे कहाँ तू वीणा बजा रही हो)
भगवन्! त्वदीय-भिक्तं न कदापि विस्मरेयम्।
निज-देश-जाति-सेवाऽऽसक्तः सदा भवेयम्।। भगवन......
जायेत जातु नो मे पर- पीडनाऽभिलाषः।
दीने सहायहीने सततं प्रभो द्वेयम्।। भगवन्.....
गतिरस्तु सर्वदेशे रितरस्तु नैजवेषे।
गुरुपाँदयोर्निदेशे स्वमनः प्रवर्तयेयम्।। भगवन्.....
कुरुते सदा विनीतो विनयं कृपैकिसिन्थो।
गुरु-पुज्य-वृन्द-सेवा-करणे वयो नयेयम्।। भगवन्.....